विदेश नीति चुनौतियां पांच साल बाद

लेखक - राकेश सूद (पूर्व राजनयिक)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न-पत्र- II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

द हिन्दू

11 जून, 2019

"एक अप्रत्याशित वैश्विक माहौल में और संसाधनों की कमी के साथ, भारत को एक घरेलू सहमति बनाने की जरूरत है।"

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने दूसरे कार्यकाल की शुरूआत कर ली है, लेकिन 2019 की दुनिया पांच साल पहले की दुनिया से काफी अव्यवस्थित प्रतीत होती है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प का चुनाव और अमेरिकी नीतिगत घोषणाओं में अप्रत्याशित बदलाव अमेरिका और चीन के बीच व्यापार युद्ध जो एक प्रौद्योगिकी युद्ध बन रहा है तथा ब्रेक्जिट और यूरोपीय संघ के आंतरिक पूर्वाग्रह अमेरिकी-रूस हथियारों के नियंत्रण समझौतों का क्षरण और परमाणु, अंतरिक्ष और साइबर डोमेन को कवर करने वाले नए हथियारों की दौड़ की संभावनाएं ईरान-परमाणु समझौते से अमेरिका का पीछे हटना और सऊदी अरब तथा ईरान के बीच बढ़ते तनाव कुछ ऐसे घटनाक्रम हैं, जो चीन के उदय से निपटने में भारत की प्रमुख विदेश नीति की जटिलताओं का निर्धारण करते हैं।

पड़ोस को पुनर्परिभाषित करना

2014 की तरह, 2019 में भी श्री मोदी ने अपना कार्यकाल पडोसी देशों पर फोकस करने के साथ शुरू किया है, लेकिन इसे फिर से परिभाषित किये जाने की जरूरत है। 2014 में, सभी दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (SAARC) के नेताओं को शपथ ग्रहण के लिए आमंत्रित किया गया था। हालाँकि, जल्द ही सार्क की भावना वाष्पित हो गई और 2016 में उरी हमले के बाद, भारत के रुख ने इस्लामाबाद में सार्क सम्मेलन के आयोजन को पूरी तरह से प्रभावित किया। इसके अलावा, किर्गिस्तान के साथ बहु क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिये बंगाल की खाड़ी पहल (बिम्सटेक, BIMSTEC) देशों (बांग्लादेश, भूटान, नेपाल, श्रीलंका, म्यांमार और थाईलैंड) ने शंघाई कोऑपरेशन ऑर्गनाइजेशन के साथ एक नए पड़ोस नीति पर जोर दिया।

फिर भी श्री मोदी के लिए पाकिस्तान की अनदेखी करना मुश्किल होगा। आतंकवादी हमले से इंकार नहीं किया जा सकता है और यह गतिज प्रतिशोध को आकर्षित करेगा। अच्छी योजना के बावजूद बालकोट (इस वर्ष) और भारतीय वायु सेना (आईएएफ) मिग -21को गिराये जाने जैसी घटना में अनपेक्षित वृद्धि का खतरा हमेशा बना रहता है। भारत और पाकिस्तान के बीच संचार चैनलों की अनुपस्थिति में, ऐसा प्रतीत होता है कि अमेरिकी, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात ने भारतीय वायुसेना के पायलट, विंग कमांडर अभिनन्दन वर्धमान की त्वरित रिहाई सुनिश्चित करने में भूमिका निभाई थी।

हमारी परिधि पर देशों के साथ संबंध इस पर निर्भर करेगा कि हम अपने पड़ोसियों को किस दृष्टिकोण से देखते हैं और इसके लिए राजनीतिक प्रबंधन की जरूरत है। पूर्व वैश्वीकृत दुनिया के क्षेत्र में भारत के वास्तविक महत्त्व का अनुवाद करना आसान था। आज, यह अधिक जटिल है। चूंकि यह सुनिश्चित करना मुश्किल हो सकता है, इसलिए प्रभुत्व के बजाय व्यापक आधारित सहमति उत्पन्न करने के आधार पर काम करना बेहतर होगा।

यह बहु-आयामी राजनयिक प्रयासों का उपयोग करने और बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उदार होने की आवश्यकता है। इसे पड़ोसी संगठनों जैसे- सार्क, बिम्सटेक, बांग्लादेश, भूटान, भारत, नेपाल पहल, बांग्लादेश-चीन-भारत-म्यांमार फोरम फॉर रीजनल कोऑपरेशन, इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन से निपटने के लिए एक अधिक आत्मविश्वास और समन्वित दृष्टिकोण की आवश्यकता है। यह अधिमानत: द्विपक्षीयता के साथ मिलकर होना चाहिए क्योंकि हमारे द्विपक्षीय संबंध हमें महत्त्वपूर्ण लाभ प्रदान करते हैं। हमारे सभी पड़ोसियों के साथ, लोगों की सीमाओं के बीच रिश्तेदारी, संस्कृति और भाषा के संबंध, देशों में सरकारों की भूमिका पड़ोसी

देशों को करीब से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। इसका मतलब है कि राजनीतिक और नौकरशाही दोनों स्तरों पर सभी देशों की सरकारों को इस पर ध्यान देना होगा।

चीन और यू.एस. का प्रबंधन

मोदी के दूसरे कार्यकाल में भी चीन सबसे महत्त्वपूर्ण मुद्दा बना रहेगा, जैसा कि हमने 2014 में देखा था। फिर, श्री मोदी राजीव गांधी के समय से चली आ रही पुरानी नीति के साथ चलपड़े, जो सीमा विवाद पर मतभेदों का प्रबंधन करते हुए आर्थिक, वाणिज्यिक और सांस्कृतिक संबंधों पर केंद्रित था और यह नीति इस उम्मीद पर टिका हुआ था कि यह अंतिम वार्ता के लिए अधिक अनुकूल वातावरण बनाएगा। हालांकि, ऐसा हुआ नहीं।एक दशक से अधिक समय से यह स्पष्ट है कि प्रक्षेपवक्र विपरीत दिशा में आगे बढ़ रहे थे और दोनों के बीच की खाई और गहरी हो रही थी। श्री मोदी के लिए, डोकलाम विवाद एक कठोर अनुस्मारक था कि पिछले तीन दशकों से चली आ रही मौन धारणा की नीति अब सफल नहीं हो सकती है।

वुहान में अनौपचारिक शिखर सम्मेलन ने शांति की झलक पेश की, लेकिन दोनों देशों के बीच बढ़ती खाई के दीर्घकालिक प्रभाव को संबोधित करने में विफल रही। इस बीच, अमेरिका और चीन के बीच बढ़ती रणनीतिक प्रतिद्वंद्विता हमारे समक्ष कड़ी है। हम अब गुटनिरपेक्ष रह कर दूरी बनाये नहीं रख सकते है। इसी समय, यू.एस. एक अस्थिर साथी है और यह वर्तमान की तुलना में इतना अस्थिर कभी नहीं रहा है।

2014 में, श्री मोदी ने 1998 में परमाणु परीक्षणों के बाद पिछले संबंधों के तहत विकसित होने वाले संबंधों पर असामान्य व्यावहारिकता प्रदर्शित की थी। नव नियुक्त विदेश मंत्री एस जयशंकर ने उस वक्त वाशिंगटन में तत्कालीन राजदूत के रूप में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। बाद में, विदेश सचिव के रूप में, उन्होंने संबंध को एक उच्चतर प्रक्षेपवक्र पर रखते हुए ओबामा प्रशासन से ट्रम्प प्रशासन तक संक्रमण को सफलतापूर्वक दिशा प्रदान की।

इसके बावजूद कई ऐसे मुद्दे सामने आए हैं, जिन पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। ईरान पर प्रतिबंधों को बढ़ाने की नीति के तहत, अमेरिका ने उन प्रतिबंधों को समाप्त कर दिया है जिसने भारत को पिछले महीने तक सीमित मात्रा में ईरानी कच्चे तेल का आयात करने में सक्षम बनाया था। सामान्यीकृत प्रणाली योजना को वापस ले लिया गया है, भारत द्वारा अमेरिका को किय जाने वाले निर्यात का लगभग 12% अमेरिका पर प्रभाव डाल रहा है, बाजार पहुँच, टैरिफ लाइनों और ई-कॉमर्स पॉलिसी में हाल के परिवर्तनों के बारे में अमेरिका की चिंताओं को दूर करने में भारत की अक्षमता के साथ बढ़ती अधीरता का संकेत है।

तीसरा अस्पष्ट मुद्दा, शायद सबसे महत्वपूर्ण, काउंटरिंग अमेरिकन एडवेंचररीज F: सैंक्शंस एक्ट (CAATSA) के तहत प्रतिबंधों का खतरा है क्योंकि रूस के साथ एस -400 वायु और मिसाइल रक्षा प्रणाली की खरीद के लिए भारत को आगे बढ़ना था। पिछले साल के अंत तक तब अमेरिकी रक्षा मंत्री जेम्स मैटिस भारत को एक छूट देने के लिए आश्वस्त थे, लेकिन अब समय बदल गया है।

बाहरी संतुलन

नई दिल्ली कैसे वाशिंगटन के साथ अपने संबंधों का प्रबंधन करती है, इसे बीजिंग और मॉस्को द्वारा करीब से देखा जाएगा। यह 1971 की याद दिलाता है, जब चीन ने तत्कालीन यूएसएसआर को संतुलित करने के लिए अमेरिका के करीब जाना शुरू किया था, जिसके साथ उसका संबंध तनावपूर्ण था। आज, दोनों यू.एस. के खिलाफ एक समान मोर्चे पर हैं, हालांकि चीन के लिए यू.एस. के साथ प्रतिद्वंद्विता अपने भूगोल और ताइवान के कारण है।

हमें विभिन्न मंत्रालयों और एजेंसियों के बीच अभी तक के मामले में और अधिक समन्वय सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। कार्यान्वयन परियोजनाओं में हमारा रिकॉर्ड सबसे बेहतर है और इस पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। पड़ोस पर ध्यान केंद्रित करना निश्चित रूप से वांछनीय है। हालाँकि, तथ्य यह भी है कि चीन भी अपने दूसरे कार्यकाल में मोदी की विदेश नीति की चुनौतियों का सामना कर रहा है। एक अनुकूल क्षेत्रीय वातावरण बनाने के लिए बाहरी संतुलन को कायम करना एक नया खेल है जिसके लिए घर पर एक नई आम सहमति बनाने की भी आवश्यकता होगी।

बिम्सटेक

- बिम्सटेक दक्षिण एशिया तथा दक्षिण पूर्वी एशिया के 7 देशों का समूह है, जो बंगाल के खाड़ी के निकट स्थित हैं।
- इसकी स्थापना 6 जून, 1997 को बैंकाक घोषणा के द्वारा की गयी थी।
- बिम्सटेक का मुख्यालय बांग्लादेश की राजधानी ढाका में स्थित है।
- बिम्सटेक के सदस्य देश भारत, नेपाल, बांग्लादेश, भूटान, श्रीलंका, म्यांमार और थाईलैंड हैं।
- इन सभी देशों की जनसंख्या लगभग 1.5 अरब है, जो कि विश्व की कुल जनसंख्या का 22% है।

उद्देश्य

- सदस्य देशों के बीच तकनीकी तथा आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देना।
- बिम्सटेक देशों के बीच प्रमुख सहयोग क्षेत्र व्यापार, तकनीक, उर्जा, परिवहन, पर्यटन और मत्स्य उद्योग हैं।
- वर्ष 2008 में इसमें 8 और सेक्टर जोड़े गए थे। यह सेक्टर कृषि, जन स्वास्थ्य, गरीबी उन्मूलन, आतंकवाद का सामना करना, पर्यावरण, संस्कृति, जलवायु परिवर्तन तथा लोगों के बीच में संपर्क हैं।

अन्य तथ्य

- यह अध्यक्षता के लिए वर्णमाला क्रम का उपयोग करता है, तदनुसार, नेपाल ने औपचारिक रूप से 2014 तक अध्यक्षता संभाली।
- 2018 शिखर सम्मेलन काठमांडू में आयोजित किया जा रहा है।
- पिछला शिखर सम्मेलन 2014 में म्यांमार में आयोजित किया गया था।
- सदस्यों के बीच मुक्त व्यापार समझौता को अभी तक अंतिम रूप दिया जाना बाकी है।

इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन (IORA)

- IORA की स्थापना का उद्देश्य हिन्द महासागर क्षेत्र में क्षेत्रीय सहयोग तथा सतत विकास को मजबूत करना है, IORA 21 सदस्य देश तथा 7 वार्ता साझेदार है।
- द्वितीय IORA नवीकरणीय उर्जा मंत्री स्तरीय बैठक में 9 सदस्य के मंत्री तथा 21 सदस्य देशों के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया।
- IORA एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन है, इसमें हिन्द महासागर से लगने वाले देश शामिल है। यह एक क्षेत्रीय फोरम है, इसमें सरकार, व्यापरियों तथा शिक्षाविदों को सिंगल प्लेटफार्म प्रदान किया जाता है।

दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (SAARC)

- दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) की स्थापना 7-8 दिसंबर, 1985 को ढाका में प्रथम सार्क सम्मेलन में की गई थी। इस संगठन की पहल ऐसे देशों को औपचारिक रूप से एक साथ लाने के लिये की गई थी, जो पहले से ही ऐतिहासिक और सांस्कृतिक तौर पर आपस में जुड़े हुए थे।
- जब सार्क की स्थापना हुई थी, उस समय इस संगठन में बांग्लादेश, भूटान, भारत, मालदीव, नेपाल, श्रीलंका और पाकिस्तान शामिल थे। बाद में वर्ष 2007 में संगठन के आठवें सदस्य के तौर पर अफगानिस्तान को भी इसमें शामिल कर लिया गया था।
- इस संगठन की स्थापना का उद्देश्य यह था कि तेजी से बढ़ती आपसी संबंधों पर निर्भर दुनिया में शांति, स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय और आर्थिक समृद्धि के उद्देश्य आपसी समझ-बूझ, पड़ोसियों के साथ अच्छे संबंध और सार्थक सहयोग से ही प्राप्त किये जा सकते हैं। गरीबी उन्मूलन, आर्थिक और सामाजिक विकास तथा ज्यादा से ज्यादा जनसंपर्क इस संगठन के मुख्य उद्देश्य हैं।

संरचना

- सार्क के संगठनात्मक ढांचे में शासनाध्यक्षों का शिखर सम्मेलन, मंत्रिपरिषद, विदेश सचिवों की स्थायी समिति, कार्यकारी समिति, तकनीकी समितियाँ और सचिवालय सम्मिलित हैं।
- राष्ट्राध्यक्षों के शिखर सम्मेलन में सभी सदस्य देश सम्मिलित होते हैं तथा यह सार्क का सर्वोच्च निर्णयकारी अंग हैं। सामान्यतया वर्ष में एक बार इस शिखर सम्मेलन का आयोजन होता है। मंत्रिपरिषद् सदस्य देशों के विदेश मंत्रियों की बनी होती है। इसके कार्य हैं- नीतियों का निर्धारण, इन नीतियों की प्रगति की समीक्षा और सहयोग के नये क्षेत्र तथा उनके लिये आवश्यक प्रक्रियाओं की पहचान करना।
- मंत्रिपरिषद की वर्ष में कम-से-कम दो बैठकें आवश्यक रूप से होती हैं, यद्यपि आवश्यकता पड़ने पर इसकी दो से अधिक बैठकें हो सकती हैं। मंत्रिपरिषद की सहायता देने के लिये कार्यकारी समिति, विदेश मंत्रियों की स्थायी समिति और 11 तकनीकी समितियों की व्यवस्था है।

क्यों भारत के लिये महत्त्वपूर्ण है सार्क?

- भारत इस संगठन का ऐसा एकमात्र सदस्य है, जिसकी चार देशों के साथ साझी जमीनी सीमा है और दो देशों के साथ साझी समुद्री सीमा है। पाकिस्तान-अफगानिस्तान को छोड़ दें, तो सार्क के किसी अन्य देश की किसी दूसरे देश के साथ साझी सीमा नहीं है। व्यापार, वाणिज्य, निवेश आदि के संदर्भ में भारत, संभावित निवेश और तकनीक का स्रोत होने के साथ-साथ अन्य सभी सार्क सदस्यों के उत्पादों के लिये एक प्रमुख बाजार भी है।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. **'बिम्सटेक' के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:-**

1. इसकी स्थापना जून, 1997 को ढ़ाका घोषणा के द्वारा की गयी थी।
2. यह दक्षिण एशिया तथा दक्षिण पूर्वी एशिया के सात देशों का समूह है।
3. इसका मुख्यालय बैंकाक में है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) 1 और 2
(b) केवल 3
(c) केवल 3
(d) उपर्युक्त सभी

2. **निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:-**

1. इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन हिन्द महासागर से लगने वाले देशों का अन्तर्राष्ट्रीय संगठन है।
2. इसका उद्देश्य हिन्द महासागर क्षेत्र में क्षेत्रीय सहयोग तथा सतत् विकास को मजबूत करना है।
3. इसमें 21 सदस्य देश तथा 7 वार्ता साझेदार है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) 1 और 2
(b) 2 और 3
(c) 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

Q. Consider the following statements regarding BIMSTEC-

1. It was established through Dhaka declaration in June 1997.
2. It is the group of all seven countries of South Asia and South-East Asia.
3. It is headquarted at Bangkok.

Which of the above statements is/are correct?

(a) 1 and 2
(b) Only 2
(c) Only 3
(d) All of the above

2. **Consider the following statements-**

1. Indian Ocean RIM Association is the international group of countries along the Indian Ocean.
2. It objective is to strengthen regional cooperation and sustainable development in Indian Ocean region.
3. It has 21 member and 7 dialogue partners.

Which of the above statements is/are correct?

(a) 1 and 2
(b) 2 and 3
(c) 1 and 3
(d) 1, 2 and 3

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्न:- क्या भू-राजनीति तथा घरेलू दबावों में परिवर्तन होने से विदेश नीतियाँ भी परिवर्तनशील होती हैं? चर्चा कीजिए।
(250 शब्द)

Q. Do foreign policies also change when there is a change in geo-politics and regional pressures? Discuss.
(250Words)

प्रश्न:- बदलते वैश्विक परिदृश्य में भारत की विदेश नीति के समक्ष विद्यमान चुनौतियों की चर्चा करें तथा सरकार के द्वारा इनसे निपटने के लिए किए गए प्रयासों का मूल्याकंन कीजिए।
(250 शब्द)

Q. Discuss the challenges present infront of foreign policy of India in changing global scenario and evaluate the measures taken by the government to tackle these.
(250Words)

नोट : 10 जून को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1(a) होगा।